सोना देने वाला सांप

भारतीय लोककथा

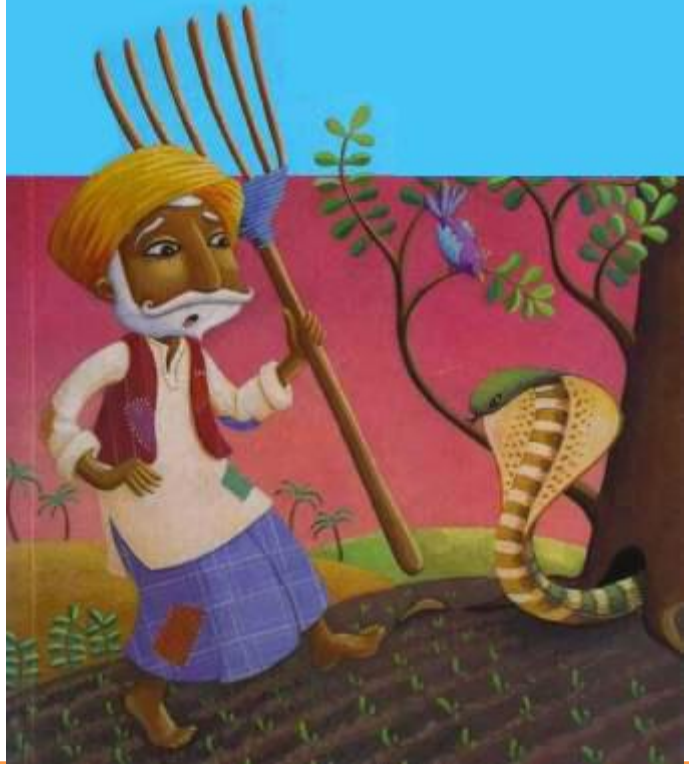

सोना देने वाला सांप

भारतीय लोककथा

एक किसान था.

उसका नाम हरिदत्त था.

वो बहुत मेहनती था, पर उसकी पत्नी और बेटा दोनों आलसी थे. वे दिन भर बैठे मिठाई खाते थे.....

.... जबकि हरिदत्त धूप में कड़ी मेहनत करता था.

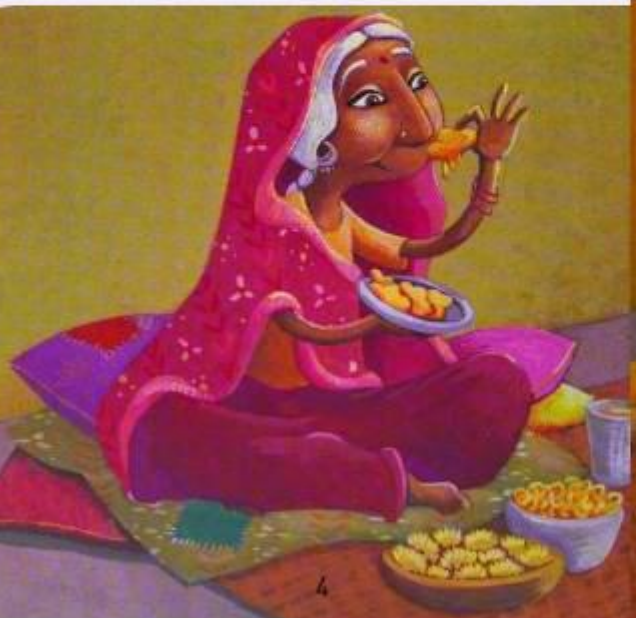

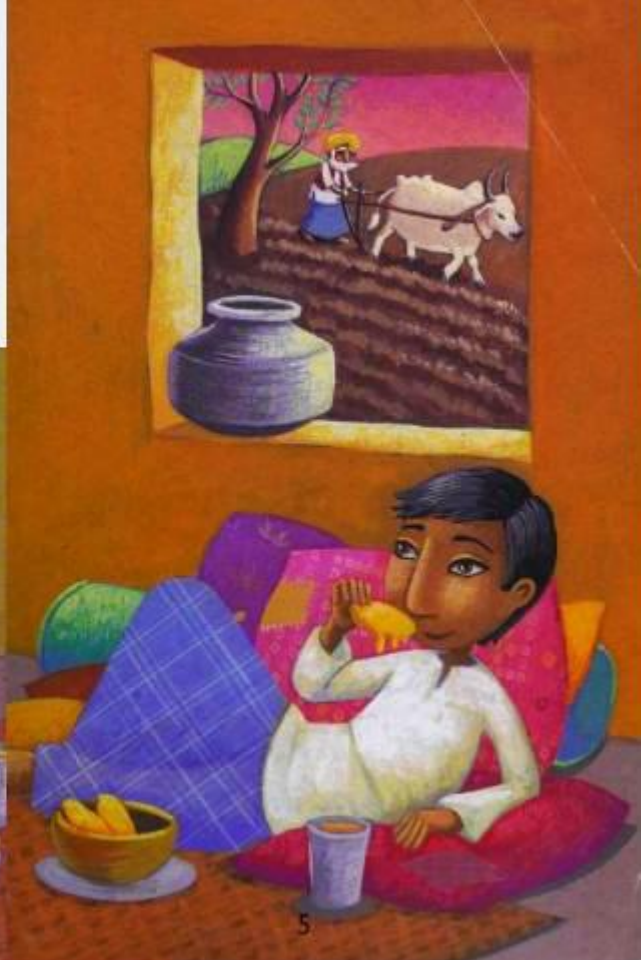

एक शाम, हरिदत्त एक पेड़ के नीचे बैठा था. तभी एक बहुत बड़ा सांप अपने बिल में से बाहर निकलकर आया.

उसे देख हरिदत्त को बहुत डर लगा.

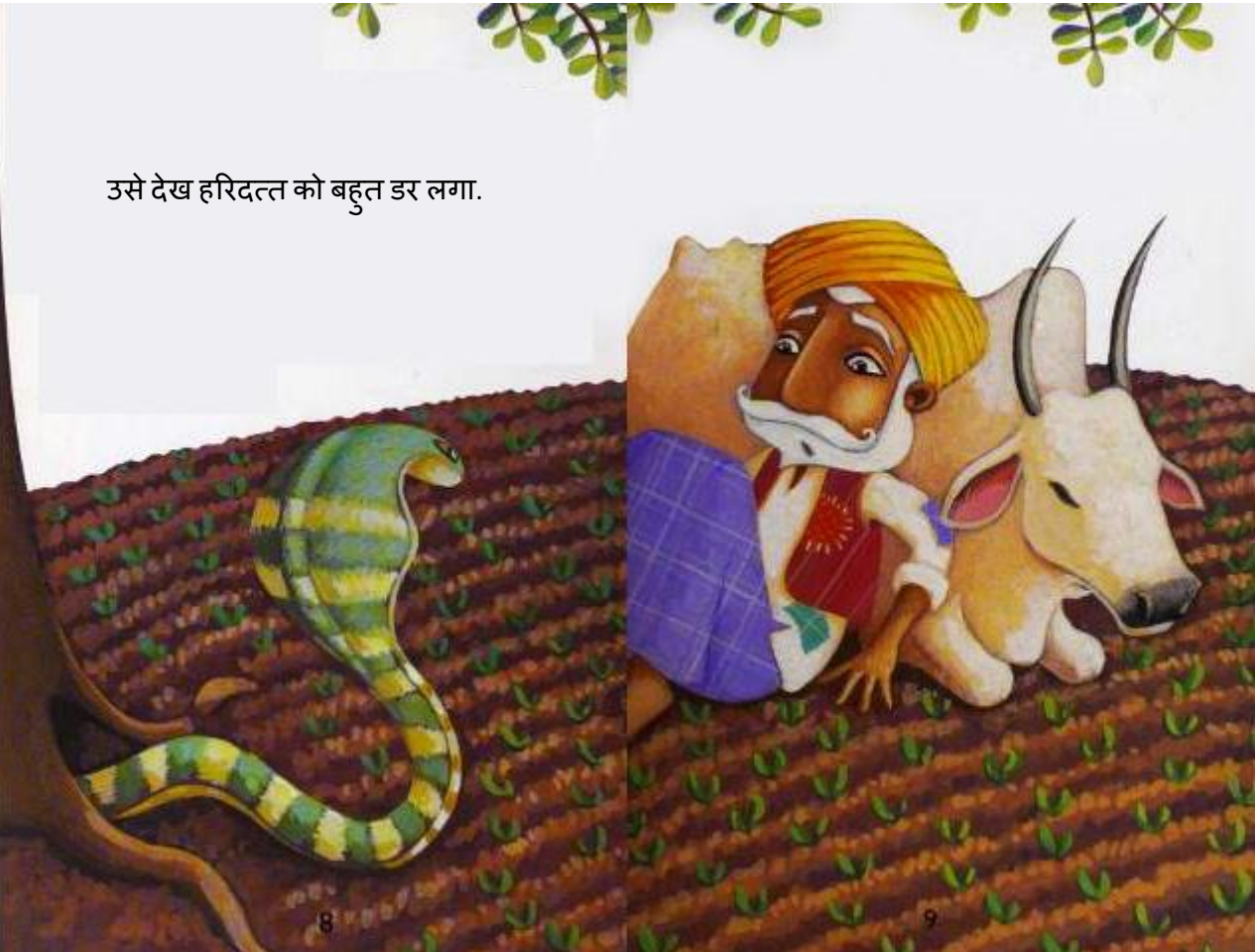

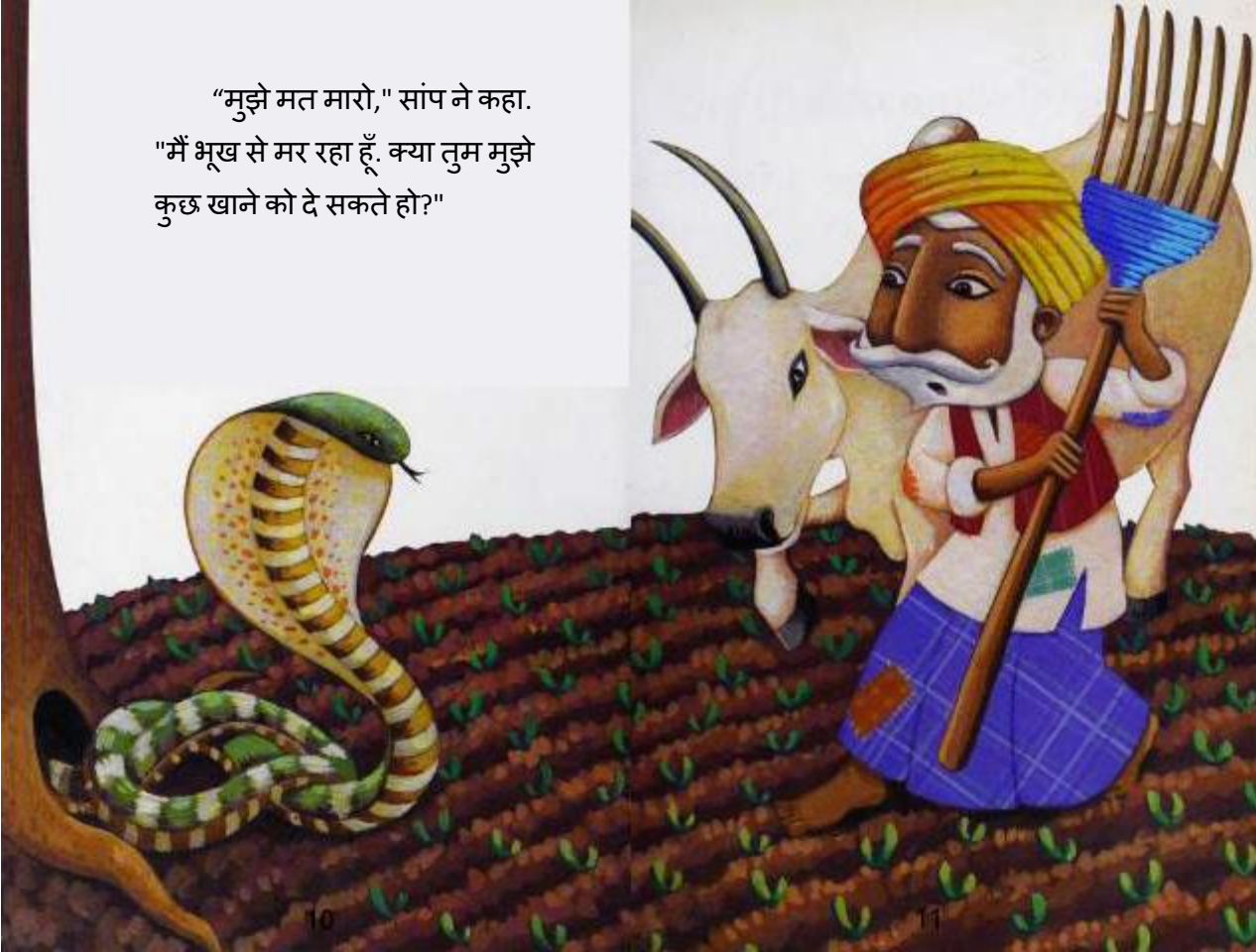

“मुझे मत मारो," सांप ने कहा. "मैं भूख से मर रहा हूँ. क्या तुम मुझे कुछ खाने को दे सकते हो?"

"मेरे पास कुछ दूध है," हरिदत्त ने कहा.

"तुम्हारा बहुत धन्यवाद!" सांप ने कहा.

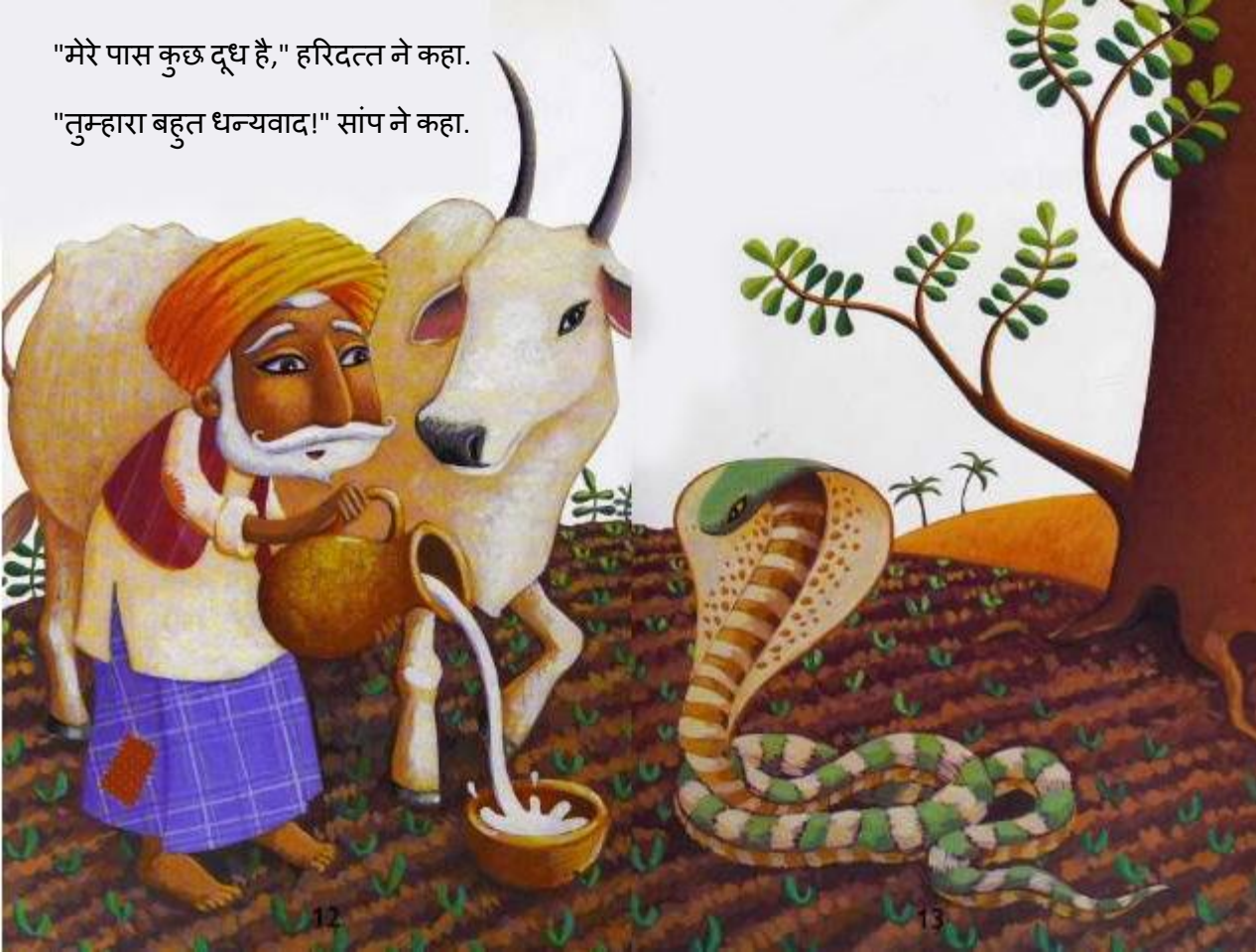

"तुम एक नेक आदमी हो," सांप ने कहा.

"तुम कल वापिस आना और मेरे बिल में झांकना."

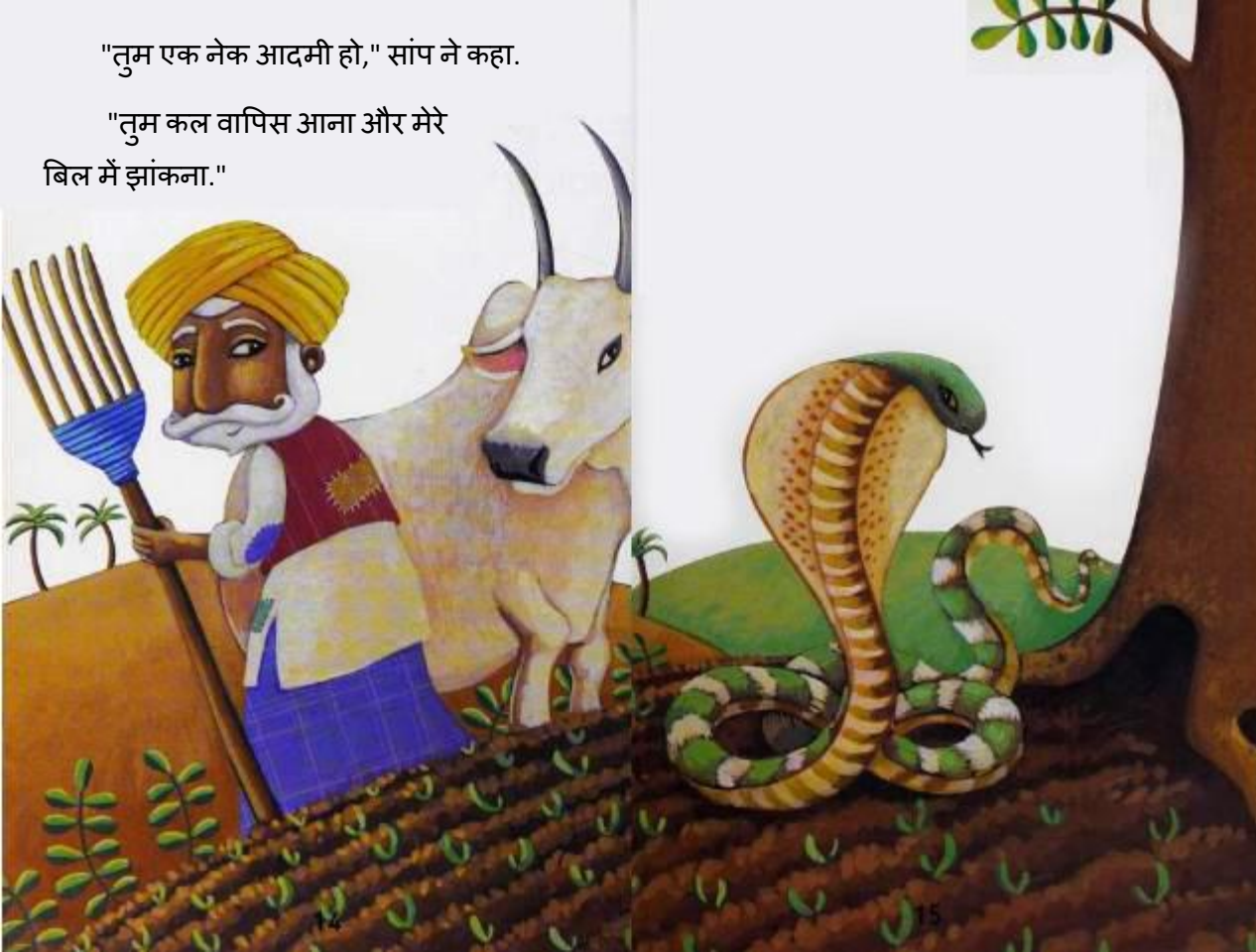

अगले दिन हरिदत्त को पेड़ के नीचे
बिल में एक सोने का टुकड़ा पड़ा मिला.

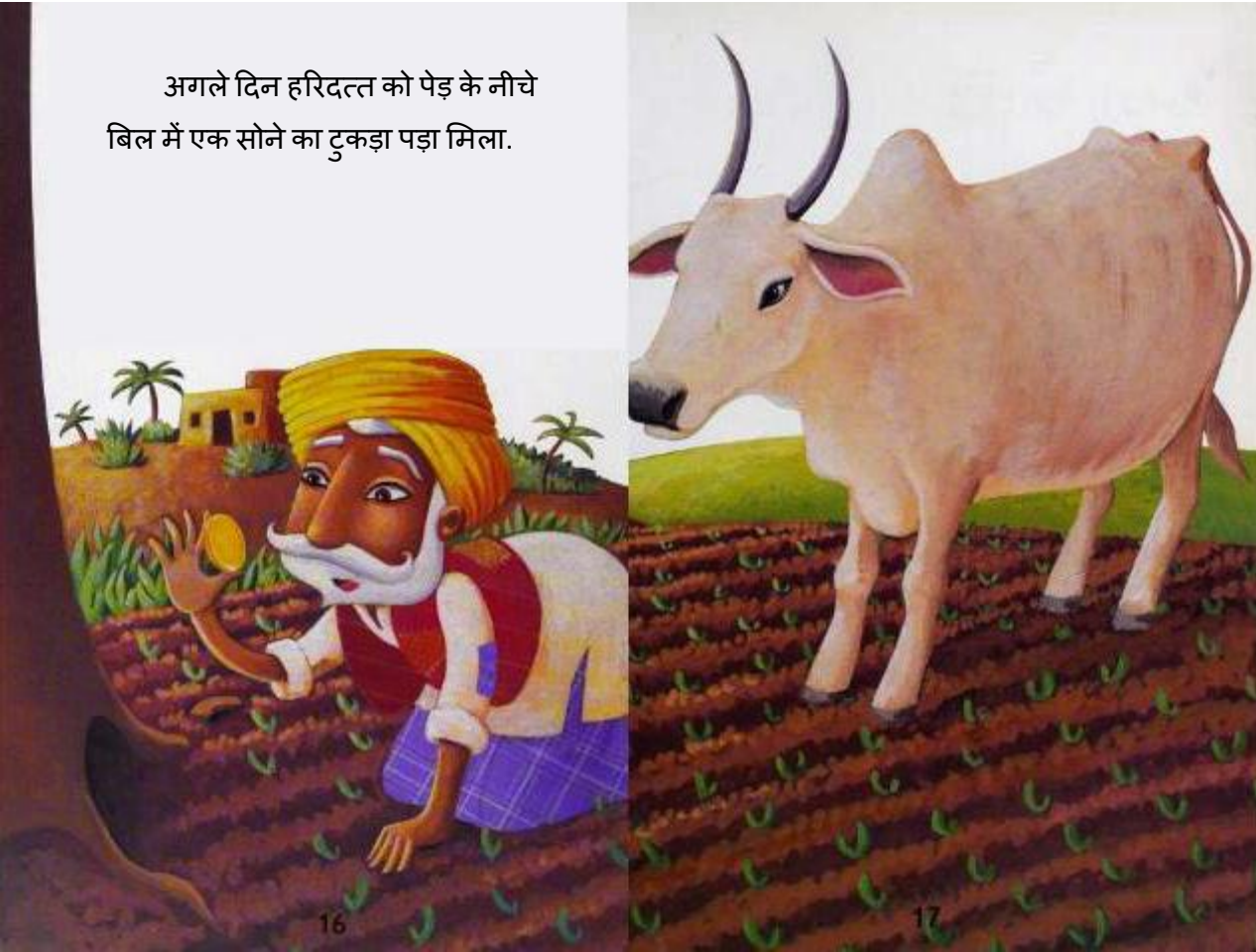

अब हर शाम हरिदत्त, सांप के लिए कुछ दूध लेकर जाता ....

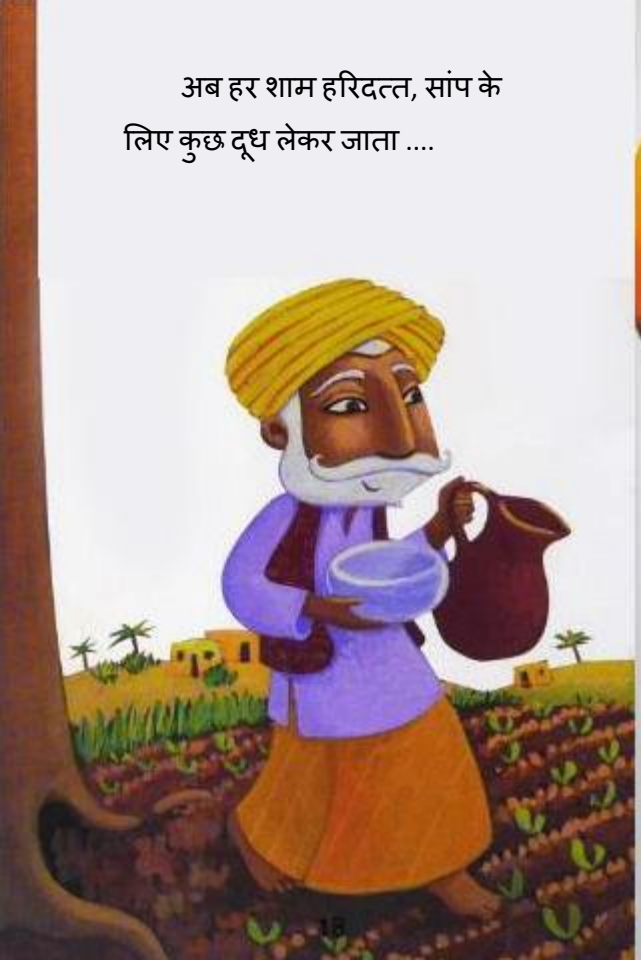

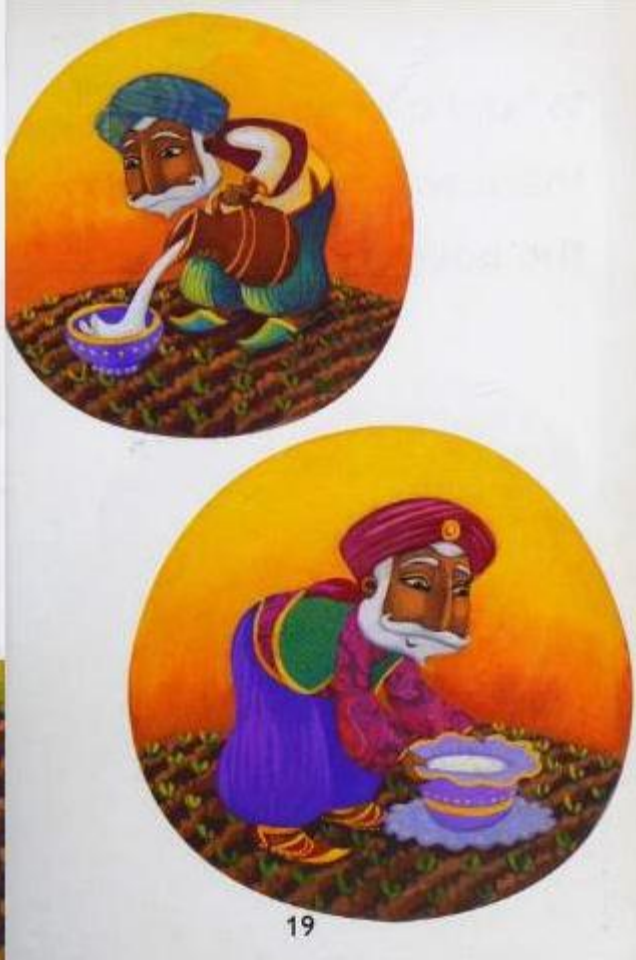

.... फिर हर सुबह पेड़ के नीचे
सांप के बिल में उसे सोना मिलता.

एक दिन दोपहर को हरिदत्त को बाजार जाना पड़ा.

"सांप को दूध देना मत भूलना," हरिदत्त ने अपने बेटे से कहा.

"लगता है इस पेड़ के नीचे बहुत सोना गढ़ा है! चलो हम सब सोना खोद लेते हैं!" पत्नी ने कहा.

"या-बू! बू-या! यहाँ से जाओ!" लड़का चिल्लाया.

सांप वहां से चला गया.

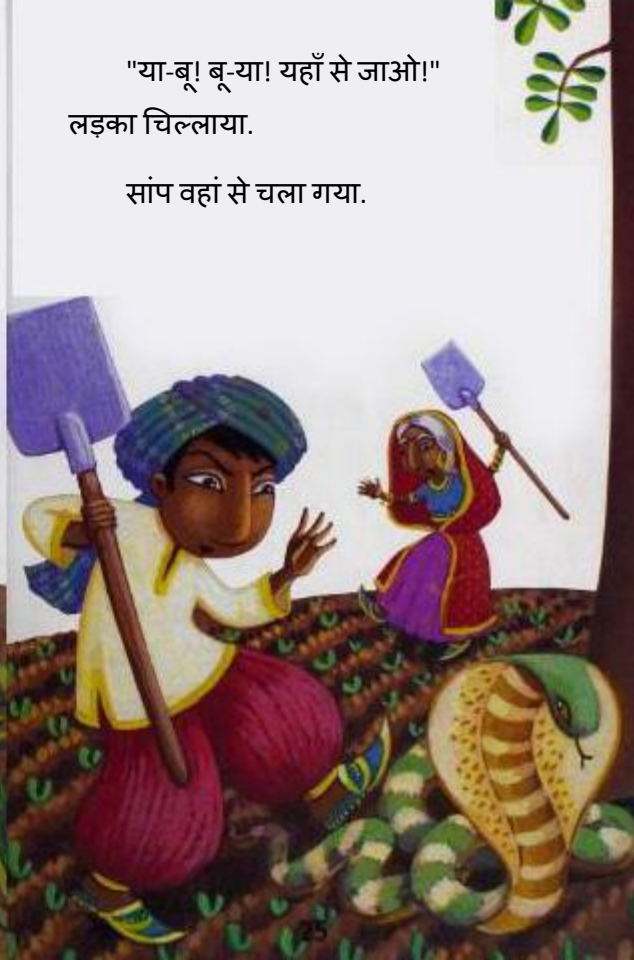

हरिदत्त की पत्नी और बेटे ने बहुत खुदाई की, पर उन्हें वहां कोई सोना नहीं मिला!

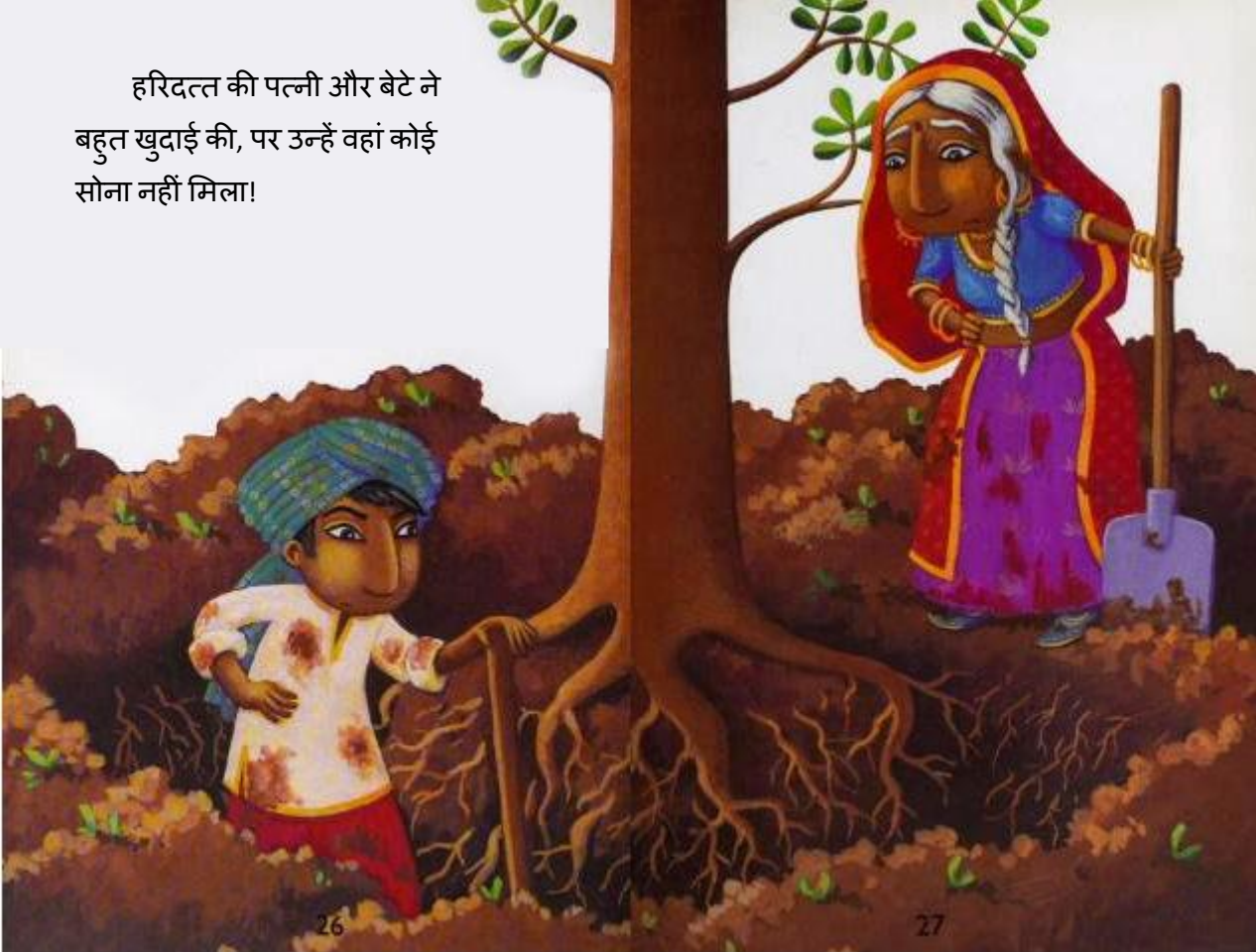

उसके बाद हरिदत्त रोज़ पेड़ के पास दूध लेकर जाता. पर उसे फिर न तो कभी सांप दिखा और न ही कोई सोना मिला!
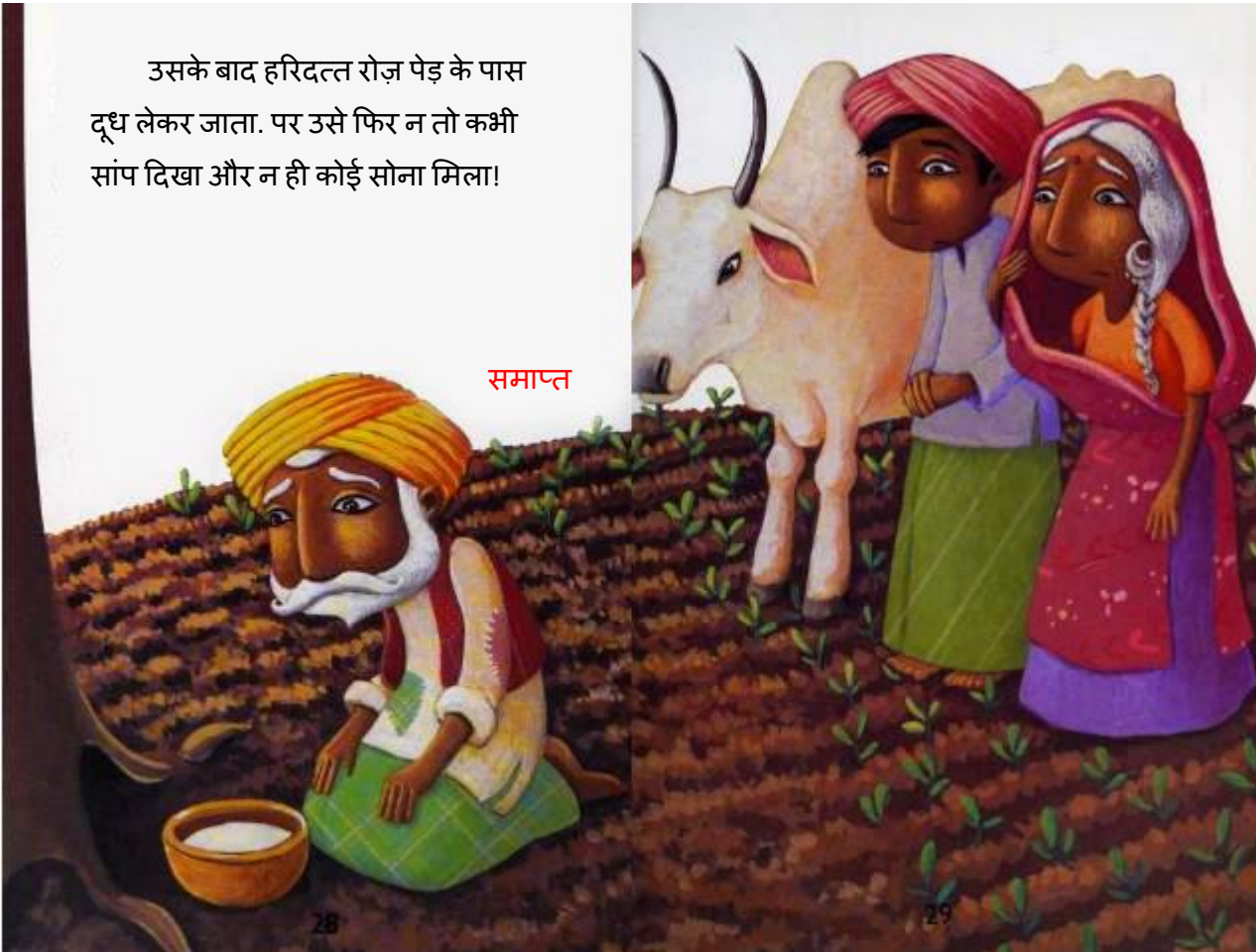
समाप्त